# श्री अन्नपूर्णा चालीसा

**इन पाठों के बारे में**

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

## श्री अन्नपूर्णा चालीसा

| | |
|---|---|
| प्रकार | चालीसा |
| देवता | माँ अन्नपूर्णा |
| संस्करण | मिलान किया गया पाठ |
| परम्परा | शाक्त |
| स्रोत | 51 चालीसा संग्रह (आरतियों सहित) — रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (2004) — Scan pages 244–247 |
| आभार | पाठ मुद्रित प्रति के स्कैन से लिया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम। |
| कॉपीराइट | Traditional devotional text in wide circulation. The poet named in the closing verse is a traditional attribution; no mo |

विश्वेश्वर पदपदम की, रज निज शीश लगाय ।

viśveśvar padapadam kī, raj nij śīś lagāy |

अन्नपूर्णे तव सुयश, बरनौं कवि मतिलाय ॥

annapūrṇe tav suyaś, baranauṃ kavi matilāy ||

नित्य अनंद करिणी माता ।

nitya anaṃd kariṇī mātā |

वर अरु अभय भाव प्रख्याता ॥ १ ॥

var aru abhay bhāv prakhyātā || 1 ||

जय सौंदर्य सिंधु जग जननी ।

jay sauṃdarya siṃdhu jag jananī |

अखिल पाप हर भव भय हरनी ॥ २ ॥

akhil pāp har bhav bhay haranī || 2 ||

श्वेत बदन पर श्वेत बसन पुनि ।

śvet badan par śvet basan puni |

संतन तुव पद सेवत ऋषिमुनि ॥ ३ ॥

saṃtan tuv pad sevat ṛṣimuni || 3 ||

काशी पुराधीश्वरी माता ।

kāśī purādhīśvarī mātā |

माहेश्वरी सकल जग त्राता ॥ ४ ॥

māheśvarī sakal jag trātā || 4 ||

बृषभारूढ़ नाम रुद्राणी ।

bṛṣabhārūṛh nām rudrāṇī |

विश्व विहारिणि जय कल्याणी ॥ ५ ॥

viśva vihāriṇi jay kalyāṇī || 5 ||


स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

पतिदेवता सुतीत शिरोमनि ।

patidevatā sutīt śiromani |

पदवी प्राप्त कीह्न गिरि नंदिनी ॥ ६ ॥

padavī prāpta kīhna giri naṃdinī || 6 ||

पति विछोह दुख सहि नहि पावा ।

pati vichoh dukh sahi nahi pāvā |

योग अगिन तब बदन जरावा ॥ ७ ॥

yog agin tab badan jarāvā || 7 ||

देह तजत शिव चरण सनेहू ।

deh tajat śiv caraṇ sanehū |

राखेहु जाते हिमगिरि गेहू ॥ ८ ॥

rākhehu jāte himagiri gehū || 8 ||

प्रकटी गिरिजा नाम धरायो ।

prakaṭī girijā nām dharāyo |

अति आनंद भवन मँह छायो ॥ ९ ॥

ati ānaṃd bhavan mam□h chāyo || 9 ||

नारद ने तब तोहिं भरमायहु ।

nārad ne tab tohiṃ bharamāyahu |

ब्याह करन हित पाठ पढ़ायहु ॥ १० ॥

byāh karan hit pāṭh paṛhāyahu || 10 ||

ब्रह्मा वरुण कुबेर गनाये ।

brahmā varuṇ kuber ganāye |

देवराज आदिक कहि गाये ॥ ११ ॥

devarāj ādik kahi gāye || 11 ||

सब देवन को सुजस बखानी ।

sab devan ko sujas bakhānī |

मतिपलटन की मन मँह ठानी ॥ १२ ॥

matipalaṭan kī man mam□h ṭhānī || 12 ||

अचल रहीं तुम प्रण पर धन्या ।

acal rahīṃ tum praṇ par dhanyā |

कीह्नी सिद्ध हिमाचल कन्या ॥ १३ ॥

kīhnī siddha himācal kanyā || 13 ||

निज कौ तव नारद घबराये ।

nij kau tav nārad ghabarāye |

तब प्रण पूरण मंत्र पढ़ाये ॥ १४ ॥

tab praṇ pūraṇ maṃtra paṛhāye || 14 ||

करन हेतु तप तोहिं उपदेशेउ ।

karan hetu tap tohiṃ upadeśeu |

संत बचन तुम सत्य परेखेहु ॥ १५ ॥

saṃt bacan tum satya parekhehu || 15 ||

गगनगिरा सुनि टरी न टारे ।

gaganagirā suni ṭarī na ṭāre |

ब्रह्मा तब तुव पास पधारे ॥ १६ ॥

brahmā tab tuv pās padhāre || 16 ||

कहेउ पुत्रि वर माँगु अनूपा ।

kaheu putri var mām□gu anūpā |

देहुँ आज तुव मति अनुरूपा ॥ १७ ॥

dehum□ āj tuv mati anurūpā || 17 ||

तुम तप कीह्न अलौकिक भारी ।

tum tap kīhna alaukik bhārī |

कष्ट उठायेहु अति सुकुमारी ॥ १८ ॥

kaṣṭa uṭhāyehu ati sukumārī || 18 ||

अब संदेह छाँड़ि कछु मोसों ।

ab saṃdeh chām□ṛi kachu mosoṃ |

है सौगंध नहीं छल तोसों ॥ १९ ॥

hai saugaṃdh nahīṃ chal tosoṃ || 19 ||

करत वेद विद ब्रह्मा जानहु ।

karat ved vid brahmā jānahu |

वचन मोर यह सांचो मानहु ॥ २० ॥

vacan mor yah sāṃco mānahu || 20 ||

तजि संकोच कहहु निज इच्छा ।

taji saṃkoc kahahu nij icchā |

देहौं मैं मन मानी भिक्षा ॥ २१ ॥

dehauṃ maiṃ man mānī bhikṣā || 21 ||

सुनि ब्रह्मा की मधुरी बानी ।

suni brahmā kī madhurī bānī |

मुखसों कछु मुसुकायि भवानी ॥ २२ ॥

mukhasoṃ kachu musukāyi bhavānī || 22 ||

बोली तुम का कहहु विधाता ।

bolī tum kā kahahu vidhātā |

तुम तो जगके स्रष्टाधाता ॥ २३ ॥

tum to jagake sraṣṭādhātā || 23 ||

मम कामना गुप्त नहिं तोंसों ।

mam kāmanā gupta nahiṃ toṃsoṃ |

कहवावा चाहहु का मोसों ॥ २४ ॥

kahavāvā cāhahu kā mosoṃ || 24 ||

दक्ष यज्ञ महँ मरती बारा ।

dakṣa yajña maham□ maratī bārā |

शंभुनाथ पुनि होहिं हमारा ॥ २५ ॥

śaṃbhunāth puni hohiṃ hamārā || 25 ||


स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

सो अब मिलहिं मोहिं मनभाये ।

so ab milahiṃ mohiṃ manabhāye |

कहि तथास्तु विधि धाम सिधाये ॥ २६ ॥

kahi tathāstu vidhi dhām sidhāye || 26 ||

तब गिरिजा शंकर तव भयऊ ।

tab girijā śaṃkar tav bhayaū |

फल कामना संशय गयऊ ॥ २७ ॥

phal kāmanā saṃśay gayaū || 27 ||

चन्द्रकोटि रवि कोटि प्रकाशा ।

candrakoṭi ravi koṭi prakāśā |

तब आनन महँ करत निवासा ॥ २८ ॥

tab ānan maham karat nivāsā || 28 ||

माला पुस्तक अंकुश सोहै ।

mālā pustak aṃkuś sohai |

करमँह अपर पाश मन मोहे ॥ २९ ॥

karamamh apar pāś man mohe || 29 ||

अन्नपूर्णे सदपूर्णे ।

annapūrṇe sadapūrṇe |

अज अनवद्य अनंत अपूर्णे ॥ ३० ॥

aj anavadya anaṃt apūrṇe || 30 ||

कृपा सगरी क्षेमंकरी माँ ।

kṛpā sagarī kṣemaṃkarī mām |

भव विभूति आनंद भरी माँ ॥ ३१ ॥

bhav vibhūti ānaṃd bharī mām || 31 ||

कमल बिलोचन विलसित बाले ।

kamal bilocan vilasit bāle |

देवि कालिके चण्डि कराले ॥ ३२ ॥

devi kālike caṇḍi karāle || 32 ||

तुम कैलास मांहि है गिरिजा ।

tum kailās māṃhi hai girijā |

विलसी आनंदसाथ सिंधुजा ॥ ३३ ॥

vilasī ānaṃdasāth siṃdhujā || 33 ||

स्वर्ग महालछमी कहलायी ।

svarga mahālachamī kahalāyī |

मर्त्य लोक लछमी पदपायी ॥ ३४ ॥

martya lok lachamī padapāyī || 34 ||

विलसी सब मँह सर्व सरूपा ।

vilasī sab mamh sarva sarūpā |

सेवत तोहिं अमर पुर भूपा ॥ ३५ ॥

sevat tohiṃ amar pur bhūpā || 35 ||


स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

जो पढ़िहहिं यह तुव चालीसा ।

jo paṛhihahiṃ yah tuv cālīsā |

फल पइहहिं शुभ साखी ईसा ॥ ३६ ॥

phal paihahiṃ śubh sākhī īsā || 36 ||

प्रात समय जो जन मन लायो ।

prāt samay jo jan man lāyo |

पढ़िहहिं भक्ति सुरुचि अधिकायो ॥ ३७ ॥

paṛhihahiṃ bhakti suruci adhikāyo || 37 ||

स्त्री कलत्र पनि मित्र पुत्र युत ।

strī kalatra pani mitra putra yut |

परमैश्वर्य लाभ लहि अद्भुत ॥ ३८ ॥

paramaiśvarya lābh lahi adbhut || 38 ||

राज विमुखको राज दिवावै ।

rāj vimukhako rāj divāvai |

जस तेरो जन सुजस बढ़ावै ॥ ३९ ॥

jas tero jan sujas baṛhāvai || 39 ||

पाठ महा मुद मंगल दाता ।

pāṭh mahā mud maṃgal dātā |

भक्त मनो वांछित निधिपाता ॥ ४० ॥

bhakta mano vāṃchit nidhipātā || 40 ||

जो यह चालीसा सुभग, पढ़ि नावहिंगे माथ ।

jo yah cālīsā subhag, paṛhi nāvahiṃge māth |

तिनके कारज सिद्ध सब, साखी काशी नाथ ॥

tinake kāraj siddha sab, sākhī kāśī nāth ||

## अर्थ

अन्नपूर्णा की स्तुति काशी की अधीश्वरी, आनन्द, वर और अभय देने वाली के रूप में है। चालीसा कथा कहती है कि सती ने योगाग्नि में देह त्यागी, गिरिजा रूप में जन्म लिया, नारद की परीक्षा में भी प्रण पर अडिग रहीं, और तप के बाद ब्रह्मा ने उन्हें शिव का वर दिया। फिर उन्हें काली, लक्ष्मी और पार्वती एक साथ कहा गया है, और अन्तिम पद कहते हैं कि प्रातः पाठ से परिवार, धन और यश मिलता है।


स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

## इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।